International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 7 Issue 7, July 2017
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

आचार्य विनोबा भावे : महात्मा गाँधी की आत्मा एवं अध्यात्मिक उत्तराधिकारी

डॉ. प्रवीण कुमार सिंह
सहायक प्राध्यापक (अतिथि)
राजनीति विज्ञान विभाग
शासकीय लरंगसाय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
रामानुजगंज बलरामपुर (छ.ग.)

आचार्य विनोबा भावे हमारे देश की एक महान विभूति है। ईश्वर परायण, गहन अन्तदृष्टि सम्पन्न, साधु पुरूष, उद्भट विद्वान तथा विचारक, तीक्ष्ण बुद्धि एवं असाधरण शक्ति सम्पन्न, भाषा वेत्ता, उच्च कोटि के लेखक, जन्म जात शिक्षक, मानवतावादी नेता और निर्माता, बाल ब्रह्मचारी और गाँधी वाद के सच्चे प्रतिनिधि माने जाते हैं विनोबा भावे। विनोबा भावे को गाँधी की आत्मा एवं गाँधी वाद के सच्चे भाष्यकार[1] तथा गाँधी का नैतिक एवं आध्यात्मिक[2] उत्तराध्किारी कहा गया है। प्रायः सभी गाँधी वादी विचारक एक मत से स्वीकार करते है कि विनोबा भावे गाँधीवाद के सच्चे व्याख्याता है। इसके साथ ही वे एक मौलिक चिंतक भी है।[3]

सत्याग्रह दर्शन के व्याख्याता विनोबा भावे भावे के व्यक्तित्व की सर्वोत्कृष्ट विशिष्टता यह रही है कि उन्होंने गाँधी के सैद्धान्तिक और व्यावहारिक दोनों पक्षों पर समान भाव से दृष्टिपात किया है। यह भी कहा जा सकता है कि ''गाँधी वाद को समुन्नत बनाने में इनकी अद्वितीय प्रतिभा तथा व्यक्तित्व का अपूर्व हाथ रहा है।''[4]

भारत के इस महान सत्याग्रही, चिंतक तथा विचारक का जन्म 11 सितम्बर सन् 1895 में महाराष्ट्र के कुलाबा जिले के गागोदा नामक ग्राम में एक सुसम्पन्न ब्राह्मण परिवार में हुआ था। इनके पिता श्री नरहरि शम्भूराव बड़े ही विवेकशील तथा नियम निष्ट पुरूष थे। उनका पाश्चात्य शिक्षा तथा विज्ञान से अगाध प्रेम था श्री मन्नारायण के अनुसार खाकी कपड़े के आविष्कार[5] का श्रेय विनोबा भावे के पिता को ही है जिसे बाद में अंग्रेज सरकार ने सेना की पोशाक के रूप में स्वीकार कर लिया।

विनोबा भावे के बाल्य जीवन पर उनकी धर्मनिष्ट एवं प्रेममयी माता का अत्यधिक प्रभाव था। बच्चों का सबसे बड़ा गुरू उसकी माता होती है। बाल्यावस्था में जो संस्कार माता–पिता द्वारा आरोपित किए जाते हैं वही जीवन भर दृढ़ हो जाते है। जो देता है वह

देव है और जिनके हाथ से कुछ छूटता ही नहीं वे राक्षस हैं यह गुरूमंत्र विनोबा भावे ने अपनी माता से ही सीखा था। वे देश भक्ति को व्यापक महत्व देती थी। वे कहती थी देश भक्ति ही ईश्वर भक्ति है। तथापि ईश्वर भजन उसके साथ होना चाहिए।

आजीवन ब्रह्मचर्य रहने का उपदेश भी विनोबा भावे को उनकी माता से प्राप्त हुआ। वे कहती थी ''जो विवाह करके सदाचारपूर्वक रहता है, वह अपने कुल की कीर्ति बढ़ाता है परन्तु जो शुद्ध ब्रह्मचारी होता है वह केवल एक पीढ़ी नहीं वरन बयालीस पीढ़ियों को पवित्र कर देता है।''[6] ऐसी माँ की गोद में पलना विनोबा भावे का बहुत बड़ा सौभाग्य था।

विनोबा भावे के घर का वातावरण राष्ट्रीय था। जब बंग का आन्दोलन चरमोत्कर्ष पर था और लोकमान्य तिलक महाराष्ट्र में स्वदेशी स्वराज्य, राष्ट्रीय शिक्षा एवं बहिष्कार का संदेश सुना रहे थे तब गागोदा में 'केसरी', 'राष्ट्रमत' और बिहारी जैसे समाचार पत्रा उनके घर पर आते थे। विनोबा भावे अत्यंत उत्सुकता पूर्वक उनको पढ़ते और नए समाचारों पर होने वाली चर्चाओं को ध्यानपूर्वक सुनते थे। विनोबा भावे के मन पर इन सब बातो का बड़ा ही व्यापक प्रभाव पड़ता था और वे राष्ट्रीयता से ओत–पोत होते जा रहे थे।

सन् 1914 में विनोबा भावे ने विद्यार्थी मंडल नामक एक संस्था की स्थापना की।[7] इन दिनों विनोबा भावे दो दिशाओं में अग्रसर हो रहे थे। एक तरफ तो उनके राष्ट्रीय विचार देशभक्ति की ओर ले जा रहे थे वहीं दूसरी तरपफ उनका धर्म और दर्शन ग्रन्थों का गहन अनुशीलन उन्हें वैराग्योन्मुख कर रहा था। इस प्रकार देशहित की भावना तथा ज्ञान–वैराग्य के प्रति उनके अधिकाधिक झुकाव ने उनके विचारों को परिपक्व बना दिया था। इस स्थिति में वे अब जीवन की दिशा खोजने में लग गए। फलतः कॉलेज की शिक्षा के प्रति उनमें अरूचि आने लगी। गीता में दिए गए स्थित प्रज्ञ की परिभाषा के अनुसार वे सुखों से अपनी इन्द्रियों को उसी प्रकार पृथक करने में लग गए थे जिस प्रकार संकट के समय कछुआ अपने अंगों को समेट लेता है। जीवन में अट्ठारह उन्नीस वर्ष की आयु जिसमें युवक सांसारिक सुखों की चाह में उन्मुख होता है वहीं विनोबा भावे दूसरी दिशा में ही अग्रसर थे। जब सन् 1914 मे प्रथम विश्व युद्ध प्रारम्भ हुआ, तो देश में स्वतंत्राता प्राप्ति की चाह बढ़ी। स्थान–स्थान पर सशस्त्र विद्रोह की तैयारी हो रही थी। इन सभी परिस्थितियों ने तो विनोबा भावे के मन को और भी असमंजस की स्थिति

में डाल दिया। फलतः उन्होंने निश्चय किया कि न तो नौकरी करेंगे और न ही व्यापार–वाणिज्य के चक्कर में पड़ेंगे अपितु आध्यात्मिक साधना उनका प्रमुख उद्देश्य होगा।

इण्टर की परीक्षा देने के लिए विनोबा भावे ने बड़ौदा से बम्बई के लिए प्रस्थान किया परन्तु मार्ग से ही दिशा परिवर्तित करके सूरत से भुसावल होते हुए वाराणसी चले आए। यात्रा के दौरान उन्होंने अपने पिता को एक पत्र लिखा ''मैं परीक्षा देने बम्बई न जाकर कहीं और जा रहा हूँ, आपको तो विश्वास है कि मैं कहीं भी जाऊ मेरे हाथ से कोई अनैतिक बात नहीं होगी।[8]

काशी का जीवन विनोबा भावे की साधना का श्री गणेश था। वे अपने विचारों के अनुकूल स्वयं को बनाने का प्रयत्न कर रहे थे। इस समय तक विनोबा भावे के पास उनके लेखों का अच्छा संग्रह हो चुका था। इस प्रकार की आसक्ति से भी उन्मुक्ति प्राप्त करने के लिए एक दिन उन्होंने अपनी रचनाओं को गंगा की धरा में विसर्जित कर दिया।

विनोबा भावे भावे जब काशी में थे, उन्हीं दिनों काशी हिन्दू विश्वविद्यालय का उद्घाटन समारोह हुआ। उक्त समारोह में विनोबा भावे ने गाँधी जी के भाषण को सुना। उनके उफपर गाँधी जी के विचारों का गहरा प्रभाव पड़ा। विनोबा भावे ने पाया कि राजनीति और अध्यात्म का बड़ा ही सुन्दर समन्वय इस व्यक्ति में है। विनोबा भावे ने गाँधी जी को एक पत्र भी लिखा और अपनी शंकाओं के सामाधान की उनसे प्रार्थना भी की। कुछ ही दिनों के पश्चात् गाँधी जी का उत्तर विनोबा भावे को प्राप्त हुआ। विनोबा भावे को इससे सन्तोष नहीं हुआ। उन्होंने पुनः गाँधी जी को पत्र लिखा गाँधी ने उत्तर में लिखा कि ''इस समय मैं बहुत व्यस्त हूँ। पत्र लिखने के लिए भी बहुत ही कम समय मिलता है। अतः अच्छा हो यदि तुम स्वयं यहाँ चले आओं। दस–पन्द्रह दिन आश्रम में रहकर यहाँ की सब बातें देखना उससे तुमको समाधन हो जाएगा।'' विनोबा भावे को यह उत्तर पसन्द आया और वे अहमदाबाद के लिए प्रस्थान कर दिए।

6 जून 1916 को विनोबा भावे की भेंट महात्मा गाँधी से हुई। इस प्रथम भेंट के बारे में विनोबा भावे स्वंय ही लिखते हैं कि काशी में रहते हुए मेरी मुख्य महत्कांक्षा थी कि हिमालय जाऊ। भीतर से यह भी अभिलाषा थी कि बंगाल भी जाऊ। परन्तु दोनों में से एक भी स्वप्न पूरा नहीं हुआ और भगवान ने मुझे ईश्वर के पास पहुँचा दिया। उनमें मुझें न केवल हिमालय की शान्ति मिली, वरन् वह ज्वलंत देशभक्ति भी मिली जो बंगाल

की विशेषता है। मैंने अपने आप से कहा कि मेरी दोनों ही अभिलाषाएँ पूर्ण हो गयी।[9] इस प्रकार गाँधी जी के जीवन में विनोबा भावे को दोनों ही प्रेरणाओं (हिमालय की शांति और बंगाल की देशभक्ति) का सुन्दर समन्वय दिखाई दिया और उनके चरणों में विनोबा भावे ने अपना सम्पूर्ण जीवन अर्पित कर दिया। प्रथम साक्षात्कार में ही विनोबा भावे ने गाँधी जी को अपना गुरू मान लिया और अपने गुरू के प्रति उनकी श्रद्धा अविचल रहीं।[10]

आश्रम में प्रवेश कर लेने के पश्चात् विनोबा भावे के जीवन की दिशा निश्चित सी हो गयी। मार्ग स्पष्ट हो जाने तथा सुयोग्य मार्गदर्शक के सानिध्य से उनके मन को कुछ सन्तोष हुआ। अहिंसा के महान आचार्य गाँधी जी ने विनोबा भावे के पिता को एक पत्र लिखा ''तुम्हारा विनोबा भावे मेरे पास है। इस छोटी सी उम्र में ही तुम्हारे पुत्र ने जो तेजस्विता तथा वैराग्य प्राप्त कर लिया है उसे प्राप्त करने में मुझें कितने ही वर्ष लग गए थे।''[11] गाँधी जी का पत्र संक्षिप्त तो था परन्तु यह विनोबा भावे के पिता को आश्वस्त करने तथा उनकी साँत्वना और गौरव गरिमा के लिए पर्याप्त था। गाँधी जी की सलाह पर विनोबा भावे ने भी एक सार गर्भित पत्र कविता के रूप में लिखा।[12] उससे विनोबा भावे के पिता को अपूर्व आत्मसन्तोष हुआ होगा।

गाँधी जी और विनोबा भावे दोनों आश्रम पर एक साथ रहते थे। श्री सी.एफ. एण्ड्रूज से विनोबा भावे का परिचय कराते हुए गाँधी जी ने कहा था कि ''आश्रम पर जो थोड़े से रत्न हैं उनमें यह युवक भी एक है।'' ये आश्रम पर आर्शीवाद पाने नहीं, आश्रम के लिए आर्शीवाद रूप में आते है।[13] कुछ समय रहने के पश्चात् विनोबा भावे के मन में संस्कृत के अध्ययन की जिज्ञासा उद्भूत हुई। अतः गाँधी जी से उन्होंने एक वर्ष की छुट्टी ली। एक वर्ष की समाप्ति के ठीक पश्चात् वे पुनः आश्रम पर उपस्थित हो गए। उनकी इस अनुशासित कर्त्तव्य निष्ठा से प्रभावित हो कर गाँधी जी ने लिखा था कि ''अपने संस्कृत के अध्ययन को आगे बढ़ाने के लिए वे एक वर्ष की छुट्टी लेकर चले गए। एक वर्ष के बाद ठीक उसी घड़ी जबकि उन्होंने एक वर्ष पहले आश्रम छोड़ा था चुपचाप आश्रम में फिर आ पहुँचे। मैं तो भूल ही गया था कि किस दिन उन्हें आश्रम में वापिस पहुँचना था।[14] इस एक वर्ष के समय में विनोबा भावे का जीवन किस प्रकार साधनारत् रहा और उन्होंने एक–एक पल का किस प्रकार उपयोग किया, यह विनोबा

भावे के उस पत्र से मिलता है जो गाँधी को उन्होंने लिखा था। विनोबा भावे ने उक्त पत्र प्रेषित किया था और गाँधी जी से पूछा था कि सत्याग्रह को प्रारम्भ करने की बात यदि हो तो मैं सर्वस्व त्यागकर पुनः वापस आ जाऊ। इधर आश्रम में क्या–क्या परिवर्तन हुआ? राष्ट्रीय शिक्षा की क्या योजना है? आप स्वयं मुझें पत्र लिखें। ऐसा विनोबा भावे का आपको पिता तुल्य मानने वाले आपके पुत्र का आग्रह है।[15] विनोबा भावे के इस पत्र को पढ़कर गाँधी जी पूरी तरह पुलकित तथा हर्षोन्मत्त हो गए। गाँधी जी ने लिखा कि ''यह (विनोबा भावे) तो पूरा भीम है। मक्षेन्द्र को मात करने वाला गोरखनाथ है।''[16] गाँधी ने कहा कि ''तुम्हारे लिए कौन सा विशेषण काम में लाऊ यह मुझें नहीं सूझता। तुम्हारी परीक्षा करने में मैं असमर्थ हूँ। तुमने जो पिता का पद दिया है उसे मैं तुम्हारी प्रेम की भेंट के रूप में स्वीकार करता हूँ। और जब मैं हिरण्कशिपु होऊ तो प्रहलाद भक्त के समान मेरा सादर निरादर करना।[17] तुम्हारे आश्रम में आने के बारें में मुझें शंका थी ही नहीं। ईश्वर तुम्हें दीर्घायु करें और तुम्हारा उपयोग हिन्द की सेवा के लिए हो यही मेरी कामना है।[18] कुछ कालावधि के पश्चात् गाँधी जी के कहने पर विनोबा भावे साबरमती आश्रम से वर्धा चले आए और 8 अप्रैल सन् 1921 को वर्धा में सत्याग्रह आश्रम की स्थापना की।[19]

देश भक्ति की भावना तो विनोबा भावे में प्रारम्भ से ही रही। उनमें सत्ता प्राप्त करने तथा ख्याति प्राप्त करने की आकांक्षा कदापि नहीं रही। प्रसिद्धि की जिन्हें परवाह नहीं थी, उनको पूज्य गाँधी जी के सत्याग्रह ने असाधरण प्रसिद्धि दे दी। यह प्रसिद्धि मिल गयी तो भी उससे जलकमलवत् निर्लिप्त रहने की शक्ति जितनी श्री विनोबा भावे की थी उतनी किसी अन्य की नहीं।[20]

13 अप्रैल सन् 1923 को नागपुर में राष्ट्रीय सप्ताह के अवसर पर राष्ट्रीय झंडे का एक जुलूस निकाला गया। अंग्रेज सरकार ने पुलिस–प्रशासन के बल पर उक्त कार्यक्रम पर रोक लगा दी। सरकार का यह कार्य एक तरपफ तो राष्ट्रीय झण्डें का अपमान था। वहीं दूसरी तरफ यह कार्य देशभक्तों को एक खुली चुनौती थी। देखते ही देखते झण्डा–सत्याग्रह ने एक अखिल भारतीय आंदोलन का रूप धारण कर लिया। विनोबा भावे आश्रम के कार्यों में लगे थे परन्तु इस आंदोलन ने उनका भी ध्यान भंग किया। उन्होंने भी यह निश्चय किया कि वे साथियों के साथ सत्याग्रह में भाग लेगें। इस बात की जानकारी जब लोगों को हुई तो लोगो ने उनसे सत्याग्रह सूत्र के संचालन की

बागडोर अपने हाथ में लेने की बात कहीं, विनोबा भावे ने यह दायित्व सहर्ष स्वीकार किया। जब पुलिस प्रशासन को इसकी सूचना प्राप्त हुई तो विनोबा भावे को गिरफ्तार करके जेल भेज दिया गया। विनोबा भावे की गिरफ्तारी के पश्चात् इस कार्य का दायित्व सरदार पटेल ने सम्हाला। 3 सितम्बर सन् 1923 को विनोबा भावे सहित सारे सत्याग्रही जेल से मुक्त कर दिए गए।[21]

सन् 1924 में दिल्ली में हिन्दू–मुस्लिम एकता के लिए गाँधी जी ने 21 दिनों का उपवास किया।[22] इस अवसर पर भी जब विनोबा भावे जी की उपस्थिति को आवश्यक समझा गया तो वे दिल्ली गए और वहाँ गाँधी जी की सेवा सुश्रुषा करते रहे। उपवास के कारण गाँधी जी की शक्ति क्षीण हो गयी थी। फलतः प्रवचनादि का कार्य भी विनोबा भावे ही करते थे। उपवास की समाप्ति के पश्चात् विनोबा भावे पुनः वर्धा वापस आ गए।

विनोबा भावे का स्वास्थ्य बाल्यावस्था से ही अच्छा नहीं रहा। एक बार सन् 1926 में विनोबा भावे अस्वस्थ हो गए। गाँधी जी ने विनोबा भावे को एक पत्र लिख कर बताया कि– "तुम भी बीमार हो जाओगे तो हम दूसरे को दोष कैसे देगें? यदि आजन्म ब्रह्मचारी भी बीमार होने का अधिकारी बन सकता है तब मेरे जैसे मनुष्य का यह अधिकार बहुत बढ़ जाता है। सच्चा ब्रह्मचारी तो वही है जिसका शरीर बज्र के समान बना हो। क्या बीमारी असमंजस का चिह्न नहीं? अब मैं आशा करता हूँ कि तुम अब पूरी तरह अच्छे हो गए होगे।[23]

सन् 1930 में जो सत्याग्रह प्रारम्भ हुआ वह भारत के स्वतंत्रता आंदोलन के इतिहास की एक बेमिसाल घटना है। गाँधी जी द्वारा कानून भंग करते ही सम्पूर्ण देश में सत्याग्रह प्रारम्भ हो गया। एक सैनिक की भाँति विनोबा भावे भी इस कार्य के लिए आगे आए।

सन् 1931 में खानदेश में सत्याग्रहियों का एक सम्मेलन में विनोबा भावे ने कहा कि– महात्मा गाँधी का सत्याग्रह सभी लोगों को पुकार रहा है। स्त्री–पुरूष, बूढ़े–बच्चे सभी के लिए इसमें स्थान है। जिस प्रकार सभी लोग राम–नाम जप कर सकतें हैं उसी प्रकार सभी लोग इसमें भाग भी ले सकते हैं। फौजों के द्वारा जो युद्ध लड़ा जाता है उसमें कुछ ही लोग भाग लेते है परन्तु जिस लड़ाई में सब लोग भाग लेते है वह बड़ा महत्वपूर्ण होता है। सत्याग्रह का अहिंसक आंदोलन सब लोगों को स्पर्श करता है। महात्मा जी का मार्ग सबको प्रेरणा देने वाला है, सबको जागृत करने वाला है।[24]

सन् 1932 में सत्याग्रह आंदोलन पुनः प्रारम्भ हुआ। धुलिया में विनोबा भावे ने जनता से स्वराज्य प्राप्ति के लिए हर तरह का त्याग करने के लिए अपील की। उन्होंने कहा ''स्वराज्य के लिए प्राण देने पड़ते है। लाठी चार्ज के समय सिर ऊँचा किए हुए खड़ा रहना है। स्वातंत्र्य देवता के सामने अपना सिर चढाना है और किसी भी हालत में अब गुलाम बनकर नहीं रहना है। हमने आज जिस झण्डे को फहराया है उसें झुकने नहीं देना है। आज राष्ट्र हमसे त्याग की अपेक्षा कर रहा है। हमें उसे पूरा करना है।[25] स्वराज्य प्राप्ति के लिए त्याग को प्रमुखता प्रदान करते हुए विनोबा भावे ने व्यापारियों से कहा कि– ''स्वराज्य के लिए यदि उनसे और कुछ न बन सके तो स्वदेशी का पालन तथा विदेशी कपड़े का बहिष्कार तो करें। मातृ भूमि की इस आजादी की लड़ाई में वे निरे तमाशबीन बनकर दूर न खड़े रहे।[26] धुलिया से विनोबा भावे जलगाँव गए। यहाँ भी उनका भाषण होने वाला था परन्तु सभाओं पर सरकार ने रोक लगा दी और उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। धीरे–धीरे धुलिया जेल में सत्याग्रहियों की भीड़ हो गयी और धुलिया जेल एक राष्ट्रीय आश्रम बन गया।

धुलिया जेल में विनोबा भावे को 'बी' श्रेणी की सुविधा प्रदान की गई। सामान्यतः 'बी' श्रेणी के कैदियों को विशेष सुविधाएँ दी जाती है, परन्तु विनोबा भावे ने 'बी' श्रेणी की सुविधाएँ त्याग कर 'सी' श्रेणी की सुविधाओं को ही अंगीकार किया। धुलिया जेल में सत्याग्रहियों की जेल के अधिकारियों से कुछ कहा–सुनी हो गयी। फलतः विनोबा भावे सहित अनेक कार्यकर्ताओं ने उपवास किया। अन्त में अन्य कार्यकर्ताओं ने समस्या के यथा शीघ्र समाधन हो जाने के आश्वासन से उपवास तोड़ दिया। परन्तु विनोबा भावे ने कहा कि ''मैं कभी उपवास नहीं करता हूँ न कभी एकादशी करता हूँ न श्विरात्रि। विगत 12 वर्षो से मैने कोई उपवास नहीं किया। अब किया है तो जब तक समस्या पूरी तरह हल नहीं हो जाती तब तक उपवास कैसे तोड़ दूँ।[27] इन पंक्तियों में विनोबा भावे के अक्खड़, जिद्दी तथा दृढ़ निश्चयी स्वभाव का परिचय प्राप्त होता है।

धुलिया जेल की सर्वाधिक विशिष्टता तथा विनोबा भावे की सर्वोत्कृष्ट उपलब्धि 'गीता प्रवचन' है।[28] धुलिया जेल में सभी सत्याग्रहियों ने विनोबा भावे से गीता पर प्रवचन करने को कहा, विनोबा भावे ने सहज ढ़ंग से स्वीकार भी कर लिया। 28 पफरवरी 1932 से यह कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ।[29] गीता के प्रति विनोबा भावे की अगाध श्रद्धा रही। विनोबा भावे के शब्दों में ''गीता और मेरा सम्बन्ध तर्क से परे है, मेरा शरीर

माता के दूध पर जितना पला है उससे कही अधिक मेरा हृदय और बुद्धि दोनों गीता के दूध से पोषित हुए हैं। जहाँ ऐसा सम्बन्ध होता है वहाँ तर्क की गुँजइश नहीं होती है। तर्क को काटकर श्रद्धा और प्रयोग के दोनों पंखों से मैं गीता–गगन में शक्ति भर उड़ान भरता रहता हूँ। मैं प्रायः गीता के ही वातावरण में रहता हूँ। जब मैं गीता के सम्बन्ध में किसी से बाते रहता हूँ तो मानों गीता के गहरे समुद्र में गोतें मारकर बैठ जाता हूँ।[30]

धुलिया जेल से छूटने के पश्चात् विनोबा भावे वर्धा चले आए। सन् 1932 के सविनय कानून भंग के दौरान सरकार ने सत्याग्रह आश्रम को बंद कर दिया था जेल में ही विनोबा भावे ने यह निश्चय कर लिया कि देश की आर्थिक उन्नति तब तक सम्भव नहीं है जब तक गाँवों के विकास पर विशेष रूप से ध्यान नहीं दिया जाता। इस कार्य की सिद्धि हेतु विनोबा भावे ने 'ग्राम सेवा मंडल' नामक संस्था की स्थापना भी की थी जिसका प्रमुख कार्य रचनात्मक कार्यो को करना था। विनोबा भावे के इस कार्यक्रम का ग्रामवासियों पर व्यापक प्रभाव हुआ। विनोबा भावे ग्राम सेवा के कार्य को जिस लगन व तत्परता के साथ सम्पादित कर रहे थे उसके प्रमाण के रूप में नवम्बर 1933 में हरिजन में प्रकाशित निम्न पंक्तियाँ धयातव्य है ''सन् 1921 में इस आश्रम की स्थापना हुई। साबरमती आश्रम को इसका जनक कहना चाहिए। आर्थिक आश्रय का श्रेय देश भक्त सेठ जमनालाल बजाज को प्राप्त है परन्तु इसके व्यवस्थापक तथा आध्यात्मिक पथ प्रदर्शक हैं विनोबा भावे भावे।''[31] गाँधी जी ने स्वयं भी 24 अक्टूबर सन् 1932 को विनोबा भावे को प्रेषित एक पत्र में गाँवों के काम पर प्रकाश डाला है। उन्होंने लिखा है कि ''मैं खूब अनुभव करता हूँ कि गाँवों में जाना कितना कठिन काम है। फिर भी कठिनाइयों के बावजूद गाँवों में तो जाना ही है। इसलिए तुम्हारे इस आरम्भ को मैं बहुत पसन्द करता हूँ।[32] उन्होंने वत्सलता से अश्रुपूरित पत्र विनोबा भावे को लिखते हुए कहा है कि ''तुम्हारी श्रद्धा और भक्ति आँखों में हर्ष के आँसू लाती है। मैं इसके निमित्त होऊँ या न होऊ परन्तु तुम्हें तो यह फल मिलेगा ही। तुम बड़ी सेवा के निमित्त बनोगें।''[33]

संसदीय कार्यक्रमों से विनोबा भावे की अरूचि सी रही है। उन्होंने रचनात्मक कार्यक्रमों को ही समाज सुधार तथा स्वराज्य प्राप्ति का सर्वोत्तम मार्ग स्वीकार किया है। रचनात्मक कार्यक्रमों में विनोबा भावे कौमी एकता की प्राप्ति पर विशेष आग्रह रखतें है। वे केवल हिन्दू–मुसलमान सिख ईसाई के बीच ही नहीं अपितु प्राणि मात्र के बीच भी वे आत्म दर्शन करते है।

सन् 1939 में द्वितीय विश्व युद्ध प्रारम्भ हुआ। देखते ही देखते द्वितीय विश्व युद्ध का दावानल विश्व के लगभग सभी देशों में फैल गया। ब्रिटेन के लिए यह जीवन और मरन का प्रश्न बन गया फलतः उसने भारत को भी द्वितीय विश्व युद्ध की विभीषिका में समाहित करने का पुरजोर प्रयत्न किया। कांग्रेस युद्ध में भाग लेना उचित नहीं समझ रही थी। ऐसी स्थिति में सत्याग्रह प्रारम्भ करना लगभग अनिवार्य सा हो गया था। स्थिति के सम्यक् अवलोकन के पश्चात् इस प्रकार की परिस्थिति में व्यक्तिगत सत्याग्रह प्रारम्भ करना उचित समझा गया। गाँधी जी को ही सत्याग्रह संचालन करना था। सत्याग्रह संग्राम की योजना पूर्ण हो जाने पर गाँधी जी ने यह विचार किया कि प्रथम सत्याग्रही किसे बनाया जाए? अन्ततः उनकी दृष्टि विनोबा भावे पर पड़ी और उन्होंने पाया कि वे ही सुयोग्य प्रथम व्यक्तिगत सत्याग्रही बन सकते है। प्रथम सत्याग्रही के रूप में विनोबा भावे का नाम घोषित करने के पूर्व गाँधी जी विनोबा भावे से अनुमति लेने पवनार गए तथा विनोबा भावे से कहा ''काँग्रेस चाहती है कि अंग्रेज सरकार के विरूद्ध लड़ाई शुरू कर दूँ। इसका रूप तथा समय क्या हो यह भी उसने मुझ पर ही छोड़ दिया है। मैं चाहता हूँ कि इसका प्रारम्भ व्यक्तिगत सत्याग्रह के रूप में हो और सोच रहा हूँ कि पहले सत्याग्रही तुम ही बनों।''[34] विनोबा भावे ने गाँधी के इस प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया। इस परिप्रेक्ष्य में गाँधी कहते हैं कि श्री विनोबा भावे भावे कौन हैं? मैंने उन्हें ही इस सत्याग्रह के लिए चुना? किसी और को क्यों नहीं? मेरे हिन्दुस्तान लौटने पर सन् 1916 में उन्होंने कॉलेज छोड़ा था। वह संस्कृत के पंडित है उन्होंने आश्रम में पहले से ही प्रवेश किया और आश्रम के प्रथम सदस्यों में वे एक है। उनकी स्मरण शक्ति आश्चर्यजनक है। वह स्वभाव से ही अध्ययनशील है तथा अपने समय का अधिकांश हिस्सा कातने में हीं लगाते हैं और उसमें ऐसे निष्णात हो गए हैं कि बहुत ही कम लोग उनकी तुलना में रखे जा सकते है।[35]

17 अक्टूबर 1940 को विनोबा भावे ने 'पवनार आश्रम' पर युद्ध विरोधी भाषण देकर सत्याग्रह प्रारम्भ किया।[36] उन्होंने जनता को सचेत किया कि वे किसी प्रकार से भी द्वितीय विश्व युद्ध में भाग न ले। सरकार ने विनोबा भावे को गिरफ्तार कर लिया और उन्हें तीन माह की सजा सुनाई गयी। तीन माह के पश्चात् जब विनोबा भावे जेल से मुक्त हुए तो गाँधी जी ने कहा कि एक बार मुक्त होने पर सत्याग्रही को पुनः सत्याग्रह करना चाहिए। विनोबा भावे ने पुनः सत्याग्रह प्रारम्भ किया। इस बार उन्हें छः

माह की सजा प्रदान की गई। तीसरी बार सत्याग्रह करने के कारण उन्हें एक वर्ष की सजा दी गई। इस बार विनोबा भावे ने नागपुर जेल में 'स्वराज्य–शास्त्र' नामक पुस्तक की रचना की।[37] विनोबा भावे की यह पुस्तक लास्की की पुस्तक (ग्रामर ऑफ पालिटिक्स) की तरह है। आकार में छोटी होने के बाद भी विचारों की मौलिकता के कारण यह छोटी सी पुस्तक आधुनिक राजनीतिशास्त्र पर लिखे गए चोटी के ग्रन्थों में गिनी जा सकती है।[38]

गाँधी जी द्वारा चलाया गया यह व्यक्तिगत सत्याग्रह लगभग 18 माह तक चलता रहा। इसके पश्चात् विनोबा भावे रचनात्मक कार्यो में लगे रहे। सन् 1942 में जब गाँधी जी ने 'भारत छोड़ो' का नारा लगाया तो सम्पूर्ण देश में यह आंदोलन तीव्रगति से फैल गया। सरकार द्वारा चोटी के नेताओं की गिरफ्तारी का कार्य भी तेजी से किया जा रहा था। व्यक्तिगत सत्याग्रह के प्रथम सेनानी वीर विनोबा भावे को सरकार ने गिरफ्तार कर लिया और वेलोर जेल भेज दिया। लगभग एक वर्ष तक उन्हें जेल में रखा गया। तत्पश्चात् जब आंदोलन में कुछ शांति आयी तो उन्हें वेलोर से शिवनी जेल भेज दिया गया। जेल से सन् 1944 में विनोबा भावे को मुक्त कर दिया गया।[39] सन् 1944 में जेल से मुक्त हो जाने के पश्चात् विनोबा भावे पुनः पवनार आश्रम वापस आ गए और पहले की ही भाँति रचनात्मक कार्यों में लगे रहे।

30 जनवरी सन् 1948 को गाँधी जी की हत्या हो गई। इसके पश्चात् मार्च सन् 1948 में सेवा ग्राम में एक सम्मेलन आहूत किया गया जिसमें डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, जवाहर लाल नेहरू, अबुल कलाम आजाद तथा जे.बी. कृपलानी इत्यादि कतिपय राजनेताओं में भाग लिया। इसके अतिरिक्त विनोबा भावे भावे, दादा धर्माधिकारी, काका साहब कालेलकर तथा जय प्रकाश नारायण जैसे प्रमुख गाँधीवादी विचारकों ने भी भाग लिया। सर्वोदय समाज की स्थापना विनोबा भावे द्वारा इसी सम्मेलन में की गयी।

6 मार्च सन् 1951 को सेवा ग्राम में गाँधी जी द्वारा स्थापित रचनात्मक संस्थाओं की कार्यकारिणी की बैठक थी। पफलतः जब अगले वर्ष शिवराम पल्ली (हैदराबाद) में सर्वोदय सम्मेलन करने का निश्चय किया गया तो उसमें विनोबा भावे भी आमंत्रित किए गए। इस सम्मेलन में विनोबा भावे ने पैदल ही जाने की इच्छा व्यक्त की। उनका कहना था कि "यदि सम्भव हो तो पैदल जाना चाहिए। उसमें देश का दर्शन होता है, जनता के

साथ सम्पर्क होता है और सर्वोदय का संदेश पहुँचाया जा सकता है।''[40] विनोबा भावे का यह निश्चय कोई नवीन बात नहीं थी, परन्तु आज इस वैज्ञानिक तथा तकनीकी युग में जब यातायात के साधन सर्व सुलभ हों ऐसी परिस्थिति में विनोबा भावे के पद यात्रा का निश्चय अवश्य ही एक आश्‍र्चजनक प्रेरणा के रूप में दिखाई पड़ता है। इस यात्रा के मूल में विनोबा भावे की धरणा यह थी कि साधनों के द्वारा हम मात्र शहरों तक पहुँच सकते हैं परन्तु वास्तविक भारत तो गाँवों में निवास करता है। गाँव के लोगों से सम्पर्क करके ही सर्वोदय का संदेश आम जनता तक पहुँचाया जा सकता है। सर्वोदय सम्मेलन में भाग लेने के उपरांत विनोबा भावे तेलंगाना जाना चाहते थे जहाँ कम्यूनिस्टों के उपद्रव से भीषण त्राहि–त्राहि मची हुई थी। ऐसे परिवेश में विनोबा भावे ने तेलंगाना के ग्रामों में प्रवेश किया, जहाँ उन्होंने भीषण गरीबी, बेकारी, भुखमरी तथा ताड़ीपान का प्रत्यक्ष दर्शन किया। इस समस्या के समाधान का प्रयास सरकार तथा कम्युनिस्टों ने अपनी–अपनी क्षमता के अनुसार किया परन्तु वे पूर्णतः असफल ही रहें। घृणा, द्वेष, पापचार तथा असंतोष की दावाग्नि दिन–प्रतिदिन उद्दीप्त तथा प्रचण्ड रूप धारण करती जा रही थी। विनोबा भावे इस समस्या का समाधान अहिंसा की शक्ति से करना चाहते थे। 18 अप्रैल 1951 को विनोबा भावे तेलंगाना के नलगुण्डा जिले के पोचमपल्ली ग्राम पहुँचे। यही वह पावन धरती है जहाँ से कल–कल नाद करती हुई भूदान–गंगा प्रवाहित होती है। अर्थात् भूस्वामियों द्वारा भूमिहीनों के लिए भूमिदान का अभियान प्रारम्भ हुआ जिसे भूदान–यज्ञ नाम दिया गया था। इसका तेलंगाना आन्दोलन को शांत करने में चमत्कारिक प्रभाव हुआ। देखते ही देखते अहिंसा की विजय, हिंसा रूपी दानव पर हुई और विनोबा भावे का नाम विश्व के सभी समाचार पत्रों के मुख पृष्ठों पर सुर्खियों में प्रकाशित हुआ। पं. नेहरू ने भी अपूर्व हर्षोल्लास के साथ विनोबा भावे की प्रशंसा लोकसभा में करते हुए कहा कि– ''इन्होंने अहिंसा के बल पर तेलंगाना में शान्ति तथा व्यवस्था की स्थापना कर दी। जहाँ पुलिस तथा फौज ने भी हाथ टेक दिए।''[41] न्यूयार्क टाईम्स के विशेष संवाददाता रार्बट ट्रम्बुल ने विनोबा भावे को प्रेम से लूटने वाला और जमीन बाँटने वाला बाबा कहा है।[42] इसी परिप्रेक्ष्य में पाश्‍चात्य विद्वान हैलम टेनिसन ने विनोबा भावे को ''मूर्तिमान भारत''[43] कहा। निश्चय ही विनोबा भावे का यह आंदोलन अहिंसक क्रान्ति का एक अद्भूत नमूना था।

इन्हीं दिनों देश में पंचवर्षीय योजना के स्वरूप पर भी विचार चल रहा था। योजना आयोग के सदस्य श्री आर.के. पाटिल विनोबा भावे से मिलने आए तथा योजना के प्रारूप पर विनोबा भावे से विचार–विमर्श किया। योजना आयोग की योजना से विनोबा भावे सहमत नहीं थे। फलतः उन्होंने योजना की व्यापक आलोचना की। विनोबा भावे द्वारा की गई आलोचना से सम्पूर्ण देश में खलबली मच गयी। पं. नेहरू ने विनोबा भावे को दिल्ली बुलाया जिससे वे अपने विचार योजना आयोग के समझ रख सके। विनोबा भावे ने पद–यात्रा द्वारा पवनार से दिल्ली यात्रा 2 माह में तय की और 13 नवम्बर 1951 को दिल्ली पहुँचे। योजना की रूपरेखा देखकर विनोबा भावे ने स्पष्टतः अपनी असमति व्यक्त की। उनका कहना था कि ''संविधान मे आपने सब नागरिकों को रोजी और रोटी का आश्वासन दिया है परन्तु अब तो आपने इस आश्वासन को एकदम भुला दिया है। आप पर यह जिम्मेदारी है कि सबको रोजी रोटी दे। अगर आप यह समझते है कि यह संभव नहीं है तो आपको त्याग पत्र दे देना चाहिए।''[44] उन्होंने कहा ''आप कहते हैं कि ग्रामोद्योगों को अपने पैरों पर खड़ा होना चाहिए परन्तु आप पैर तो पहले ही काट देते हैं और फिर खड़ा होने को कहते हैं। ग्रामोंद्योग अपने आप नहीं मरें हैं उनकी तो सोच समझकर हत्या की गई है। आपकी योजना तो देश को सदा के लिए भिखारी बनाने वाली है। अधिक उत्पादन के लिए वह किसी को प्रेरणा नहीं दे सकती।[45] इस प्रकार विनोबा भावे ने सम्पूर्ण योजना को ही चुनौती दे दी।

1960 के दशक तक विनोबा भावे पूरे देश का भ्रमण कर 'भूदान–ग्रामदान' आंदोलन की सार्थकता को जनमानस के हृदय में बिठाने, तथा 'जय जगत' का अलख जगाने में लगें रहे। परन्तु सत्तर और अस्सी के दशक में उनके चिंतन और विचारों में मूलभूत अंतर दिखाई देता है। इस कालावधि में उन्होंने क्षेत्र सन्यास लेकर चिरंतन सत्य की प्राप्ति हेतु 'मौन–साधना' के माध्यम से अपना समय परम धाम 'पवनार–आश्रम' पर व्यतीत किया। बिहार आंदोलन में अखिल भारत सर्व–सेवा संघ की भूमिका विनोबा भावे को पसन्द नहीं थी। बिहार आंदोलन को देश व्यापी आंदोलन का स्वरूप बनता देख तत्कालीन प्रधनमंत्री श्रीमति इन्दिरा गाँधी ने आंतरिक अशान्ति के नाम पर सम्पूर्ण देश में प्रथम बार आंतरिक आपातकाल की उद्घोषणा (25 जून 1975) कर दिया। उस समय विनोबा भावे जी ने आपात काल को 'अनुशासन पर्व' की संज्ञा दी थी जिसका देश भर

में व्यापक विरोध हुआ। लोगों द्वारा विनोबा भावे को 'सरकारी संत', 'सरकार का समर्थक' तथा 'ब्राह्मण जाति का समर्थक' जैसे संबोधन प्रदान किए गए। जिसकी व्यापक स्तर पर कटु आलोचना भी हुई। अपने जीवन का अंतिम सत्याग्रह 'गो–हत्या' बंदी को लेकर उन्होंने किया था परन्तु श्रीमति गाँधी ने मात्र झूठा आश्वासन देकर उनका आंदोलन भंग करवा दिया। विनोबा भावे जी को यह विश्वास था कि श्रीमति इन्दिरा गाँधी 'गोवध' बंद करवा देंगी परन्तु ऐसा हुआ नहीं।

अक्टूबर–नवम्बर 1982 में जब विनोबा भावे जी अस्वस्थ हो गए तो स्वयं इंदिरा जी ने विनोबा भावे को बीमारी के उपचारार्थ औषधि लेने की सलाह दी, तब उन्होंने अपनी मौनावस्था में कहा था ''गोरक्षार्थ अब विनोबा भावे को प्रभु से साक्षात्कार करना ही जरूरी है, न कि जीवन की रक्षा के लिए दवा का सेवन।''15 नवम्बर 1982 को कार्तिक अमावस्या की तिथि को विनोबा भावे ने नश्वर शरीर का परित्याग कर 'महापरिनिर्वाण' को प्राप्त किया। आजीवन सत्यान्वेषण तथा सर्वोदय की सिद्धि के लिए संघर्षरत रहने के कारण ही विनोबा भावे को भारतीय चिंतकों एवं मनीषियों की पंक्ति में लाकर खड़ा कर दिया।

सत्याग्रह दर्शन के व्याख्याता तथा प्रयोगकर्ता विनोबा भावे हमारे सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन के प्रेरणा स्रोत रहें हैं। वे एक युग पुरूष थे जो जिधर भी पदार्पण करते थे एक नवीन क्रान्ति को जन्म देते थे। उनकी ईश्वर में अगाध श्रद्धा थी। उनके समूचे व्यक्तित्व में ज्ञान योग, भक्ति योग तथा कर्म योग का दुर्लभ समन्वय दिखाई पड़ता है। विनोंबा की इन दुर्लभ तथा अनोखी विशिष्टताओं के कारण ही उनका क्रान्तिकारी रूप निखर जाता है। ज्योब्रेस्टर गार्ड,[46] हैलम–टेनिसन[47] जैसे पाश्चात्य विद्वानों ने भी विनोबा भावे को क्रान्तिकारी गाँधीवादी माना है। विनोबा भावे के व्यक्तित्व और कृतित्व को देखकर ऐसा आभासित होता है कि वे दूसरे गाँधी थे। विनोबा भावे के कार्य और आकृति सबमें गाँधी की प्रतिछाया का आभास होता है। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि विनोबा भावे के विचार गाँधी के ही विचार है। इतना अवश्य है कि अपनी पैनी दृष्टि तथा चातुर्य पूर्ण लेखन शैली के माध्यम से उन्होंने अपने चिंतन में नवीनता तथा मौलिकता लाने का प्रयास किया है।

संदर्भ– सूची

1. दिवान प्रभाकर ''गाँधी जीवन विषयक तत्व ज्ञान के एक मात्र भाष्यकार विनोबा भावे'' जमालुद्दीन (सम्पा) विनोबा दर्शन, (लोकोदय प्रकाशन, वर्धा 1948) पृ.–56
2. विश्वनाथ टण्डन, सोशल, एण्ड पोलिटिकल फिलोसोपफी ऑफ सर्वोदय आफ्टर गाँधी , (सर्व–सेवा–संघ प्रकाशन–वाराणसी, 1965) पृ.–4
3. विश्वनाथ टण्डन, सोशल, एण्ड पोलिटिकल फिलोसोफी ऑफ सर्वोदय आफ्टर गाँधी, (सर्व–सेवा–संघ प्रकाशन–वाराणसी, 1965) पृ.–5
4. डॉ॰ú दशरथ सिंह, गाँधीवाद को विनोबा की देन, पृ.–42
5. श्री मन्नारायण, ऋषि विनोबा (जीवन और कार्य) सर्व–सेवा–संघ प्रकाशन, वाराणसी 1972, पृ. 15
6. बाबू राव जोशी, तपोध्न विनोबा, हिन्दी–साहित्य मंदिर, पृ.–19
7. आर्थर कोस्टलकरद्ध विनोबा व्यक्तित्व और विचार, पृ.44 (गोपाल राव काले का संस्मरण)
8. बाबू राव जोशी, तपोध्न विनोबा, पृ–35
9. विनोबा, व्यक्तित्व और विचार, पृ –489
10. जय प्रकाश नारायण, मेरी विचार यात्रा, सर्व–सेवा संघ प्रकाशन वाराणसी, 1974, पृ.163 |
11. बाबू राव जोशी, तपोध्न विनोबा, पृ.–41
12. गाँधी, सत्याग्रह आश्रम, 1.1.1917 का पत्र वही पृ. 43
13. श्री मन्नारायण, ऋषि विनोबा जीवन और कार्य, पृ. 43
14. विनोबा : व्यक्तित्व और विचार, पृ.–490
15. विनोबा : व्यक्तित्व और विचार, पृ.–491
16. विनोबा : व्यक्तित्व और विचार, पृ.–491
17. विनोबा : व्यक्तित्व और विचार, पृ.–491
18. विनोबा : व्यक्तित्व और विचार, पृ.–659

19. (महादेव देसाई) विनोबा के विचार भाग–1, सस्ता साहित्य मंडल प्रकाशन दिल्ली, 1963, पृ. 3
20. विनोबा : व्यक्तित्व और विचार, पृ.–659
21. जोशी, बाबू राव, तपोध्न विनोबा, पृ.–84
22. श्री मन्नारायण, ऋषि विनोबा जीवन और कार्य, पृ.–84
23. जोशी, बाबू राव, तपोध्न विनोबा, पृ.–78
24. जोशी, बाबू राव, तपोध्न विनोबा, पृ.–78
25. श्री मन्नारायण, ऋषि विनोबा जीवन और कार्य, पृ.–84
26. बाबू राव जोशी, तपोध्न विनोबा, पृ.–81
27. विनोबा : गीता प्रवचन, सर्व–सेवा–संघ प्रकाशन वाराणसी, 1981, पृ.–4
28. विनोबा : व्यक्तित्व और विचार, पृ.–660
29. बाबू राव जोशी, तपोध्न विनोबा, पृ.–81
30. हरिजन, 14.11.33, पृ.–32
31. विनोबा : व्यक्तित्व और विचार, पृ.–492
32. विनोबा : व्यक्तित्व और विचार, पृ.–493
33. बाबू राव जोशी, तपोध्न विनोबा, पृ.–101
34. विनोबा–विचार भाग 1 परिचय महात्मा गाँधी, पृ.–5।
35. विनोबा : व्यक्तित्व और विचार, पृ.–661
36. विनोबा, सर्वोदय और स्वराज्य शास्त्र, पृ.–154
37. श्री मन्नारायण, ऋषि विनोबा जीवन और कार्य, पृ.–126
38. विनोबा : व्यक्तित्व और विचार, पृ.–661
39. बाबू राव जोशी, तपोध्न विनोबा, पृ.–661
40. भूदान यज्ञ अगस्त 6 नई दिल्ली, पृ.– 28
41. भूदान यज्ञ अगस्त 6 नई दिल्ली, पृ.– 30

42. भूदान यज्ञ अगस्त 6 नई दिल्ली, पृ.– 31

43. भूदान यज्ञ अगस्त 6 नई दिल्ली, पृ.– 205

44. भूदान यज्ञ अगस्त 6 नई दिल्ली, पृ.– 206

45. श्री मन्नारायणः विनोबा हिज लाइपफ एण्ड वर्क (बाम्बे पापुलर प्रकाशन 1970), पृ.–25

46. कोस्टर गार्ड, ज्योपफे एण्ड कुरेल, येलविल द जेंटिल एनारकिस्ट, (आक्स फोर्ड क्लेरेन्डन प्रेस 1971) पृ.–7

47. हैलम टेनिसन, सेंट आन द मार्च, द स्टोरी ऑफ विनोबा (लंदन गोलान्ज 1955) पृ.–223